विचार बिन्दु

वृक्ष खुद गर्मी सहन कर शरण में आये राहगीर को गर्मी से बचाता है।
–कालिदास

उच्च शिक्षा के बजट में कटौती और विश्वगुरु बनने के सपने

नवम्बर का महीना न केवल देश के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू के जन्म का महीना है, यह महीना दुनिया भर के अकादमिक क्षेत्रों में भारत का परचम लहराने वाले अपने देश के अग्रणी विश्वविद्यालय जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) की स्थापना का भी महीना है। भारतीय संसद द्वारा 22 दिसंबर 1966 को इसके निर्माण का प्रस्ताव पारित किया गया और 14 नवंबर, 1969 को जेएनयू अधिनियम 1966 (1966 का 53) के तहत इसकी स्थापना हुई। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने 13 दिसंबर 1947 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एक भाषण देते हुए कहा था, "किसी भी विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहनशीलता, तर्कशीलता, चिंतन प्रक्रिया और सत्य की खोज की भावना को स्थापित करना होता है।" यह बहुत उपयुक्त है कि पण्डित नेहरू आजीवन जिन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहे, यह विश्वविद्यालय उन्हीं मूल्यों से संचालित होता है। राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, जीवन का लोकतांत्रिक तरीका, अंतरराष्ट्रीय समझ और समाज की समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसके मूल में हैं। इसका उद्देश्य है "अध्ययन, अनुसंधान और अपने समस्त जीवन के प्रभाव द्वारा ज्ञान का प्रसार करना।"

यद्यपि आयु की दृष्टि से यह विश्वविद्यालय देश के अनेक विश्वविद्यालयों से छोटा है, अपने अस्तित्व के इतने कम वर्षों में ही इसने अपनी उत्कृष्टता को स्थापित व प्रमाणित किया है। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) ने इसे चार के पैमाने पर 3.91 का ग्रेड पॉइण्ट दिया है जो अब तक देश के किसी भी विश्वविद्यालय को दिया गया सर्वोच्च ग्रेड पॉइण्ट है। भारत सरकार के राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) द्वारा वर्ष 2016 में इस विश्वविद्यालय को देश के सभी विश्वविद्यालयों में तीसरा और वर्ष 2017 में दूसरा स्थान प्रदान किया गया था। वर्ष 2017 में इस विश्वविद्यालय को भारत के राष्ट्रपति ने देश के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय का पुरस्कार प्रदान किया। इससे पहले सन 2012 में जेएनयू को समस्त मानकों पर देश का सबसे अच्छा विश्वविद्यालय घोषित किया जा चुका था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय के कई शैक्षिक केंद्रों को उत्कृष्टता केंद्र घोषित कर रखा है।

यहीं यह बात ग़ौर तलब है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुसार 31 मार्च, 2023 तक भारत में कुल 1078 विश्वविद्यालय हैं। इनमें 54 केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं। यहीं यह बात भी विचारणीय है कि अमरीका में कुल 3216 विश्वविद्यालय ही हैं लेकिन अगर प्रतिष्ठा की बात की जाए, तो मुंह से यही निकलता है कि कहां वे और कहां हम। आखिर क्या वजह है कि हमारे विश्वविद्यालय वैश्विक स्तर पर वैसी प्रतिष्ठा अर्जित नहीं कर सके हैं? इस सवाल पर विचार करने के साथ ही इस बात पर भी ध्यान जाना चाहिए कि अगर हमारा एक विश्वविद्यालय भी दुनिया में अपनी जगह बना सका है तो हम ऐसा क्या करें और क्या न करें कि वह विश्वविद्यालय तो अपनी उत्कृष्टता बनाए रखे ही, अन्य संस्थान भी अपने प्रदर्शन को बेहतर कर सकें।

ये सब बातें हमारे मन में आती हैं लेकिन उसी के साथ यह बात भी हमारा ध्यान खींचती है कि पिछले कुछ बरसों में इस विश्वविद्यालय की छवि को धूमिल करने के संगठित प्रयास किए गए हैं। यह बात बहुत कष्टप्रद लगती है कि हम श्रेष्ठ का निर्माण करने की बजाय जो श्रेष्ठ है उसे ध्वस्त करने में अपनी सारी ऊर्जा लगाए जा रहे हैं। समाज का एक बड़ा तबका ऐसा है जो सकारात्मकता की बजाय नकारात्मकता को बहुत आसानी से स्वीकार करता है। उनके सामने अगर आप किसी की प्रशंसा करें तो उस पर उन्हें भरपूर संदेह होगा, लेकिन अगर किसी की बुराई करें तो वे उसे एक सौ दस फीसदी सही मान कर उसके प्रचार प्रसार में जुट जाएंगे। इसी तबके की इस मानसिकता के कंधों पर सवार होकर जेएनयू को बदनाम करने का सुनियोजित अभियान चलाया गया और इसे टुकड़े-टुकड़े गैंग की नर्सरी के रूप में स्थापित करने के कामयाबी हासिल की गई। बड़े ज़ोर-शोर से इस बात को प्रचारित किया गया कि यहां निकम्मे और देशद्रोही किस्म के युवा जनता के खून पसीने से अर्जित गाढ़ी कमाई का दुरुपयोग करके ऐश-ओ-आराम का जीवन व्यतीत करते हैं। टुकड़े-टुकड़े गैंग वाली बात कहीं भी और कभी भी प्रमाणित नहीं हुई, लेकिन एक झूठ को हज़ार बार दुहरा कर सच के रूप में स्थापित कर देने के कौशल को इसने एक बार फिर से सही साबित कर दिया। बेशक यह विश्वविद्यालय महंगा नहीं है। लेकिन यह भी याद रखा जाना चाहिए कि इसके और देश के अन्य शिक्षण संस्थानों की स्थापना के मूल में भी यह बात रही है कि देश का वंचित और विपन्न तबका भी बेहतर उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके। मेरी पीढ़ी के अधिकांश लोग सरकार द्वारा वित्त पोषित और बहुत कम फीस वाले ऐसे ही संस्थानों में पढ़कर अपने जीवन में आगे बढ़ सके हैं। असल में आज़ादी के बाद हमारे विचारवान नेताओं ने जन कल्याणकारी योजनाओं को तरजीह दी और उनके अठागामी सोच की ही यह सुखद परिणति है कि आज देश के पास एक मज़बूत ढांचा है। लेकिन इधर के वर्षों में एक नया सोच सामने लाया जाने लगा है जिसके तहत सरकारों द्वारा जनता के कल्याण के लिए किए जाने वाले कामों को मुफ्तखोरी बता कर अपमानित किया जाता है। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को आहिस्ता-आहिस्ता कमज़ोर और विफल करके निजीकरण को अपने पंख फैलाने के अवसर दिये जा रहे हैं। पहले आप बजट में कटौती कीजिए, संबद्ध संस्थान को ठीक से काम मत करने दीजिए, फिर उस पर निकम्मेपन की तोहमत लगा दीजिए। ऐसा बहुत सारे क्षेत्रों में किया जा रहा है। इसके पीछे के सोच को सहज ही समझा जा सकता है।

मेरा बहुत स्पष्ट मत है कि अगर आप अपनी नई पीढ़ी को उसकी आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा सुलभ नहीं करवा पाते हैं तो यह आपकी असफलता है। अच्छी शिक्षा पर सबका हक़ होना चाहिए और साधनों की कमी इसमें बाधक नहीं बननी चाहिए। जिनके पास साधन नहीं हैं, उन्हें शिक्षा से, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रखकर हम अपने ही देश के भविष्य को अंधकारमय बनाते हैं।

यही प्रवृत्ति अब देश के इस बेहतरीन विश्वविद्यालय को भी अपना शिकार बना रही है। एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र में छपी रिपोर्ट बताती है कि सरकार ने पिछले छह बरसों में इस विश्वविद्यालय को शोध और अकादमिक कामों के लिए दिये जाने वाले अनुदान की राशि में लगभग 90 प्रतिशत की कटौती कर दी है। जी हां, आपने सही पढ़ा है नब्बे प्रतिशत की कटौती कर दी है। इन कामों के लिए जहां सन 2015-16 में कुल 21.83 करोड़ की राशि दी गई थी, सन 2021-22 में इस राशि को घटाकर मात्र 2.82 करोड़ कर दिया गया है। अगर इस कटौती के विस्तार में जाए तो हम पाते हैं कि प्रयोगशालाओं के लिए दी जाने वाली 3.16 करोड़ की राशि को घटाकर मात्र 36 लाख, सेमिनारों और वर्कशॉप्स के लिए दी जाने वाली राशि को 1.79 करोड़ से घटाकर मात्र 38 लाख, और छात्रवृत्ति आदि के लिए दी जाने वाली 15.8 करोड़ की राशि को घटाकर केवल दो लाख कर दिया गया है। इन कटौतियों का प्रभाव क्या होगा? एक तो यह कि विश्वविद्यालय को अपनी गतिविधियों में कमी करनी होगी। प्रयोगशालाएं आर्थिक अभाव के चलते उतनी अच्छी सुविधाएं नहीं दे सकेंगी, सेमिनार और वर्कशॉप्स कम हो जाएंगे, और दूसरा यह कि वंचित विपन्न वर्ग के विद्यार्थियों के लिए यहां पढ़ना मुश्क़िल हो जाएगा। और यह दूसरी बात इस विश्वविद्यालय की आधारभूत संकल्पना के ही खिलाफ़ है। यहां की एडमिशनपॉलिसी पिछड़े इलाके से आने वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त अंक देकर उन्हें पिछड़ेपन से निकाल कर मुख्यधारा में लाना चाहती है लेकिन इस तरह की कटौती उनका यहां रहना कठिन बना देगी। और इस तरह यह विश्वविद्यालय आहिस्ता-आहिस्ता अपनी श्रेष्ठता और विशिष्टता को खो देगा। भले ही हमने कोई नया और बेहतर विश्वविद्यालय न बनाया हो, हम इस बात पर ज़रूर अपनी पीठ थपथपा लेंगे कि एक अच्छे ख़ासे उत्कृष्ट संस्थान को हमने बर्बाद कर दिया।

वैसे यह सोच कि शिक्षा जैसी चीज़ पर अपने संसाधन लगाना बेमानी है, देश के अन्य शिक्षण संस्थानों तक भी फैलता जा रहा है। हाल में आई एक ख़बर के अनुसार दिल्ली विश्वविद्यालय के अंठोज़ी विभाग ने पी-एचडी की फीस में 1100 फीसदी की वृद्धि कर दी है। पहले यह फीस 1,932 रुपये थी, जिसे अब बढ़ाकर 23, 968 रुपये कर दिया गया है। कुछ समय पहले भारतीय प्रौद्योगिक संस्थानों (आईआईटी) से भी इसी तरह की फ़ीस वृद्धि की खबरें आई थीं। राज्यों के विश्वविद्यालय बदहाली के जिस दौर से गुज़र रहे हैं, उनकी बात करना ही बेकार है। सरकारों के पास उन्हें देने के लिए बजट नहीं हैं। बिना शिक्षकों के विश्वविद्यालय चलाए जा रहे हैं। ऐसे में यह बात और भी अधिक कष्टप्रद लगती है कि एक तरफ तो हम विश्वगुरु होने का सपना देखते-दिखाते हैं और दूसरी तरफ ले देकर हमारे पास जो एक विश्वविद्यालय ऐसा है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं, हम उसे भी वैसा नहीं रहने देने के लिए हर मुमकिन प्रयास कर रहे हैं। मेरा बहुत स्पष्ट मत है कि अगर आप अपनी नई पीढ़ी को उसकी आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा सुलभ नहीं करवा पाते हैं तो यह आपकी असफलता है। अच्छी शिक्षा पर सबका हक़ होना चाहिए और साधनों की कमी इसमें बाधक नहीं बननी चाहिए। जिनके पास साधन नहीं हैं, उन्हें शिक्षा से, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रखकर हम अपने ही देश के भविष्य को अंधकारमय बनाते हैं। और अगर हम ऐसा करते हैं तो हमें बड़ी-बड़ी बातें करने का कोई हक़ नहीं है। अच्छा तो यह हो कि हम अपने बहुत सारे फिज़ूल के खर्चों में कटौती करके जन कल्याणकारी योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर मज़बूती प्रदान करें, लेकिन हो यह रहा है कि हम ऐसी तमाम योजनाओं की जड़ों को ही कमज़ोर करने पर तुले हुए हैं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

वाहन प्रदूषण में सुधार बड़ी चुनौती है

अविनाश जोशी

महानगरों में बढ़ते वायु प्रदूषण और उससे पैदा होने वाली परेशानियों के मद्देनजर वाहनों के संचालन को नियंत्रित करने की सलाह लंबे समय से दी जाती रही है। अब तो जलवायु संकट से पार पाने के लिए तमाम देशों पर कार्बन उत्सर्जन में कटौती का दबाव है। इसलिए भी पेट्रोल-डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन की जगह बिजली और सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहनों को प्रोत्साहन देने पर जोर है।

जब वाहन प्रदूषण को कम करने की बात आती है तो आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का अनुमान लगाने वाले अच्छे नियम बनाना इसे कम करने में बहुत मददगार हो सकता है। कानून निर्माताओं को ऐसे कानूनों का मसौदा तैयार करना चाहिए जो लोगों को वाहन प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए आवश्यक कदम उठाने में मदद करें। ऐसे कानूनों में आयात किए जा सकने वाले वाहनों की आयु पर एक सीमा लगाना, सड़क पर चलने योग्य वाहनों की स्थितियों पर दिशानिर्देश निर्धारित करना और ऐसी एजेंसियां बनाना शामिल हो सकता है जो हरित ऊर्जा जैसे वैकल्पिक ईंधन पर ध्यान देंगी। वैश्विक मोर्चे पर, विश्व नेताओं को एक साथ आना चाहिए और प्रदूषण को खत्म करने या कम करने के लिए मानक प्रथाओं पर सहमत होना चाहिए। इन्हें अपनाया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक राष्ट्र वांछित परिणाम प्राप्त करने में अपनी भूमिका निभा सके। भारतीय पेट्रोलियम मंत्रालय ने सुझाव दिया है कि दस लाख से अधिक आबादी वाले शहरों में डीजल से चलने वाले वाहनों पर रोक लगा देनी चाहिए। अगले बारह सालों में आंतरिक दहन वाले इंजन से चलने वाले दुपहिया और तिपहिया वाहनों को भी बंद कर देना चाहिए। अगले दस सालों में शहरी क्षेत्रों में एक भी डीजल चालित वाहन नहीं होना चाहिए। अगर इन पर नियंत्रण कर लिया गया, तो निस्संदेह काफी हद तक कार्बन उत्सर्जन में कमी लाई जा सकती है।

शहरों में डीजल से चलने वाले निजी वाहनों पर रोक लगाने का सुझाव पुराना है। मगर हकीकत यह है कि आजकल जिस तरह बड़े वाहनों का आकर्षण बढ़ रहा है, उसमें डीजल से चलने वाली गाड़ियों का निर्माण भारी संख्या में होने लगा है। फिर सार्वजनिक वाहनों के रूप में बसों और माल ढुलाई के लिए उपयोग होने वाले भारी ट्रकों की वजह से भी वायु प्रदूषण की दर पर काबू पाना कठिन बना हुआ है। हालांकि महानगरों में मालवाहक वाहनों का प्रवेश निश्चित समय के लिए ही खुला रखा जाता है, फिर बाहर से आने वाले वाहनों को शहर में प्रवेश करने के बजाय बाहरी मार्गों से निकाल दिया जाता है, फिर भी वायु गुणवत्ता में सुधार दर्ज नहीं हो पाता। भारत के कुछ शहर दुनिया के कुछ सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार हैं। ऐसे में विद्युत चालित वाहनों के चलन पर जोर दिया जा रहा है। पेट्रोल और डीजल में एथेनाल आदि मिला कर कार्बन उत्सर्जन पर काबू पाने का प्रयास किया जा रहा है। मगर इन उपायों का भी कोई उल्लेखनीय प्रभाव नजर नहीं आता।

वायु गुणवत्ता में सुधार बड़ी चुनौती है और इससे पार पाने के लिए कुछ कठोर कदम उठाने को बुरा नहीं कहा जा सकता। मगर पहले वैकल्पिक व्यवस्था तैयार करना बहुत जरूरी है। आजकल वाहन हर किसी की जरूरत बन चुके हैं। दुपहिया वाहन सामान्य आयवर्ग के लोगों के लिए जरूरी साधन हैं। ऐसे में उन्हें एकदम से खत्म करना बड़ी असुविधा पैदा कर सकता है। हालांकि बैट्री से चलने वाले दुपहिया वाहनों को बढ़ावा दिया जा रहा है, मगर अभी उनके लिए जरूरी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं और उनका उपयोग उस तरह लंबी दूरी के लिए नहीं किया जा सकता, जिस तरह जीवाश्म ईंधन से चलने वाले वाहनों का किया जाता है। अब कारें भी विद्युत चालित आने लगी हैं, पर उनके सामने भी वही समस्या है। सार्वजनिक वाहन और मालवाहकों में डीजल की जगह कैसा इंजन लगाया जाएगा, जो भारी वजन उठा सके, यह देखने की बात है। मोटर वाहनों द्वारा पर्यावरण में हानिकारक सामग्री का प्रवेश वाहन प्रदूषण है। प्रदूषक के रूप में जानी जाने वाली ये सामग्रियां मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र पर कई बुरे प्रभाव डालती हैं। आज सड़कों पर बड़ी संख्या में उपलब्ध वाहनों के कारण दुनिया भर के कई देशों में परिवहन वायु प्रदूषण का एक प्रमुख स्त्रोत है। क्रय शक्ति में वृद्धि का मतलब है कि अधिक लोग अब कार खरीद सकते हैं और यह पर्यावरण के लिए बुरा है। भारत में बढ़ते शहरीकरण के कारण वाहन प्रदूषण चिंताजनक दर से बढ़ा है। शहरी क्षेत्रों, विशेषकर बड़े शहरों में वाहनों से होने वाला वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गया है। वाहनों से होने वाला प्रदूषण खांसी, सिरदर्द, मतली, आंखों में जलन, विभिन्न ब्रोन्कियल और दृश्यता समस्याओं जैसे लक्षणों के माध्यम से दिखना शुरू हो गया है।

वाहन प्रदूषण का मुख्य कारण वाहनों की तेजी से बढ़ती संख्या है। वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन से ओजोन परत का ह्रास होता है और यह ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनता है। इसका परिणाम प्रतिकूल मौसम होता है जिसके परिणामस्वरूप अक्सर जान-माल की हानि होती है। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया की कई प्रमुख सरकारों के लिए चिंता का विषय है और इसे कम करने के लिए जानबूझकर प्रयास किए गए हैं। ओजोन परत के ख़त्म होने से, सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणें पृथ्वी की निचली सतह तक पहुँच सकती हैं और ग्रह पर मनुष्यों और अन्य जीवित जीवों को नुकसान पहुँचा सकती है।

यदि आपके पास कार है तो भी परिवहन के वैकल्पिक साधनों का उपयोग करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। कोई व्यक्ति काम पर जाने के लिए बाइक, ट्रेन या बस की सवारी कर सकता है। जब आपका कार्यस्थल आपके निवास स्थान से अधिक दूर न हो तो पैदल चलना भी एक विकल्प है। बाइक चलाना, साथ ही पैदल चलना, व्यायाम और फिटनेस आहार के बेहतरीन विकल्प प्रदान करता है। बहुत से लोग तब काम छोड़ देते हैं जब वे पहले से ही थके हुए होते हैं और उनके पास फिटनेस दिनचर्या के लिए समय नहीं होता है, इसलिए यह स्वस्थ रहने का एक मजेदार विकल्प होगा। यह आपकी कार का उपयोग करने की तुलना में सस्ता भी है, जिसमें अभी भी ईंधन भरने, रखरखाव की आवश्यकता होगी और आपको पार्किंग शुल्क के रूप में कुछ रुपये खर्च करने होंगे। परिवहन के इन वैकल्पिक साधनों का उपयोग करना स्मार्ट विकल्प है।

यह अक्सर कहा जाता है कि हमारे पास केवल एक ही पृथ्वी है और हमें इसकी रक्षा के लिए सब कुछ करना चाहिए। कोई भी किनारे बैठकर देखने का जोखिम नहीं उठा सकता क्योंकि जब प्रदूषण की बात आती है, तो हर कोई प्रभावित होता है, यहां तक कि वे भी जिन्होंने इसमें योगदान नहीं दिया। वाहन परिवहन दुनिया भर में वायु प्रदूषण के प्रमुख कारणों में से एक है। अच्छी बात यह है कि इसके बारे में वास्तव में कुछ किया जा सकता है। इसकी शुरुआत स्वच्छ ग्रह के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी से होती है। जब लोग अपनी मानसिकता बदलते हैं और अधिक सक्रिय हो जाते हैं, तो बहुत सी अच्छी चीजें हासिल की जा सकती हैं। इसी प्रकार वाहन प्रदूषण को भी कम एवं प्रबंधित किया जा सकता है।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

वन विभाग की टीम ने 15 टन लकड़ियों से भरा ट्रक जब्त किया

खेतड़ी, (निसं)। अवैध लकड़ियों के परिवहन पर कार्रवाई करते हुए रविवार को वन विभाग की टीम ने लकड़ियों से भरे ट्रक को जब्त किया है। इस दौरान वन विभाग की टीम ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर 15 टन लकड़ियां बरामद की है।

वन विभाग के रेंजर विजय कुमार फगेड़िया ने बताया कि अवैध लकड़ियों के परिवहन को लेकर उच्च अधिकारियों के निर्देश पर विशेष अभियान चला कर कार्रवाई की जा रही है। इसी दौरान वन विभाग की टीम को सूचना मिली कि एक ट्रक में अवैध रूप से लकड़ियां भरकर हरियाणा की ओर ले जाए जा रही हैं। जिस पर वन विभाग की ओर से सिंघाना थाना क्षेत्र के सागा गांव के पास नाकाबंदी की गई। नाकाबंदी के दौरान एक ट्रक आता हुआ दिखाई दिया, जिसको रुकवा कर तलाशी ली गई तो उसमें अवैध रूप से रोहिड़ा की लकड़ियां भरी हुई थी। इस संबंध में जब ट्रक चालक से पूछताछ की गई तो वह कोई जवाब नहीं दे पाया। जिस पर वन विभाग की टीम ने लकड़ियों से भरे ट्रक को जब्त कर भंडारा तन सीकर निवासी हनुमान पुत्र भोलाराम को गिरफ्तार कर लिया।

रेंजर ने बताया कि आरोपी द्वारा प्रथम पूछताछ में सामने आया कि ट्रक में राज्य वृक्ष रोहिड़ा की लकड़ियां भरी हुई थी, जिनके परिवहन को लेकर चालक के पास कोई वैद्य कागजात नहीं पाए गए। ट्रक में भारी लकड़ियों को प्रतिबंधित क्षेत्र से हरियाणा में ले जाने की बात सामने आई है, जिस पर ट्रक को जब्त कर रेंज कार्यालय में लाया गया है। उन्होंने बताया कि अवैध लकड़ियों व अवैध खनन के खिलाफ वन विभाग की ओर से अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है और इन पर रोक लगाने को लेकर विभाग की टीमों की ओर से प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। इस दौरान टीम में वनपाल शाहरुख खान, सहायक वनपाल सत्यवान, मनोज, ओम प्रकाश, वनरक्षक साधु राम, अरुण सैनी, ईश्वर सिंह, महिपाल रिणवा आदि शामिल थे।

सागा गांव के पास नाकाबंदी में रोहिड़ा की लकड़ियों से भरा ट्रक जब्त का एक जने को गिरफ्तार किया।

"मोमासर उत्सव" ने कला प्रेमियों का दिल जीता

जयपुर। बीकानेर के मोमासर कस्बे में आयोजित "मोमासर उत्सव" कई मायनों में एक अनूठा और अलग तरह का कल्चरल फेस्टिवल है।

देश के इस सबसे बड़े ग्रामीण लोक संगीत आयोजन में ना कोई छोटा है, ना कोई बड़ा और ना ही कोई वीआईपी। यहां दर्शक ज़मीन पर बैठकर देश-दुनिया के नामी लोक कलाकारों को देखते सुनते हैं और उनकी अद्भुत कला को देखकर तालियां नहीं थमती। ऐसे दुर्लभ गीत-संगीत और कलाओं से रूबरू होने की कोई फीस या कोई टिकट नहीं। यह आयोजन सबके लिए फ्री है। हर साल देश-दुनिया से हज़ारों दर्शक कला की इस अनूठी दुनिया से आत्मसात करने आते हैं।

■ देश का सबसे बड़ा ग्रामीण लोक संगीत उत्सव जो सबके लिए फ्री, कोई टिकट या फीस नहीं

उत्सव अनूठा इसलिए भी है क्योंकि इसका आयोजन गांव की हवेलियों में, खुले रेगिस्तानी मैदान में, गांव के जोहड़ जैसी सहज और सुंदर जगहों पर होता है। उत्सव की सबसे बड़ी बात है कि आयोजन में चाहे सजावट हो, आगंतुकों का खान-पान हो, रहने की व्यवस्था हो सब स्थानीय रूप से मौजूद संसाधनों से ही होता है।

उत्सव के दूसरे दिन सुबह द सैंड्स में सुमित्रा दास के भक्ति गीतों ने रेगिस्तान की मिट्टी में भक्ति का अमृत रस घोल दिया। दोपहर को हवेली चौक में पतासी देवी-संतरा देवी भोपी द्वारा भजन प्रस्तुति दी गई। इसके बाद इस्माइल खां लंगा ने सारंगी पर लंगा समुदाय के लोक गीतों से दर्शकों को रिझाया। रात को ताल मैदान में हज़ारों दर्शकों की मौजूदगी के बीच संगीता सिंघल और समूह ने घूमर और नोरंग लाल व समूह ने चंग नृत्य की प्रस्तुति दी।

इटेलिअन लोक संगीत ग्रुप गाई साबेर की राजस्थानी कलाकारों के साथ जुगलबंदी ने एहसास कराया कि संगीत को सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। शिवम डांस अकेडमी के मंजीरा नृत्य और मांगीलाल-पवन कुमार और साथियों के ढोल-थाली नृत्य ने राजस्थान की संस्कृति को साकार किया। श्रीचंद्र मोहन भट्ट के निर्देशन में महिला कलाकारों ने डिवाइन स्ट्रिंग्स में सितार पर सुरों की मनमोहक तान छेड़ी। देर रात तक चले कार्यक्रम में रामगोपाल सपेरा और साथियों ने संगीतमय बीन नृत्य किया।

इसके बाद कथक-लोक संगीत जुगलबंदी और लंगा-मांगणियार संगीत जुगलबंदी को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध होकर कह उठे "भई वाह ऐसा गीत संगीत अब तक नहीं देखा"। दिनभर दर्शकों को 'धुंधलाती धुनें' में लोक वाद्य निर्माण और कलाकारों की अनसुनी कहानियाँ सुनने का अवसर मिला। मोमासर हाट बाज़ार के उत्पादों में भी दर्शकों ने खासा रुचि दिखाई।

उत्सव का समापन तीसरे दिन राजू देवी, राकेश भोपा और साथियों के भक्ति संगीत से हुई। 'मोमासर उत्सव' का इस बार यह 11वां संस्करण है। यह उत्सव राजस्थान की संस्कृति, अद्भुत कला और दुर्लभ लोक संगीत को बरसों से सहेजता आ रहा है। यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा आयोजन है जिसमें इतने बड़े स्तर पर समुदाय और आमजन की सहभागिता रहती है।

गौरतलब है कि मोमासर उत्सव का आयोजन "जाजम फाउंडेशन" के द्वारा किया जाता है। इसके मुख्य प्रायोजक सुरवि चैरिटेबल ट्रस्ट है। इसके सह-प्रायोजक संचेती ग्रुप हैं। नागपाल इवेंट्स-जयपुर, विश-मेकर्स-दिल्ली, लोक-धुनी फाउंडेशन, डांसिंग पिकॉक और मर्करी कम्यूनिकेशन इस उत्सव के आयोजन सहयोगी हैं।

बीकानेर के मोमासर कस्बे में आयोजित "मोमासर उत्सव" में कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 6 नवम्बर, 2023

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, अश्लेषा नक्षत्र दिन 1:22 तक, शुक्ल योग दिन 2:25 तक, तैतिल करण सांय 4:35 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:22 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मेष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज बुध वृश्चिक राशि में सांय 4:26 पर प्रवेश करेगा। आज महापात योग सांय 7:55 से रात्रि 12:50 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:05 तक, शुभ 9:27 से 10:49 तक, चर 1:32 से 2:54 तक, लाभ-अमृत 2:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:43, सूर्यास्त 5:37

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

सिंह
व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्रमा शुभ नहीं है।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित मामलों में आर्थिक परेशानी हो सकती है। आज आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।